श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र

श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र- मूल संस्कृत पाठ (Shri Radha Kripa Kataksh Stotra Sanskrit Text)

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि, प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुञ्जभूविलासिनि।
व्रजेन्द्रभानुनन्दिनि व्रजेन्द्रसूनुसंगते, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥१॥

अशोकवृक्षवल्लरी वितानमण्डपस्थिते, प्रवालज्वालपल्लव प्रभारुणांघ्रिकोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥२॥

अनंगरंगमंगल-प्रसंगभंगुरभ्रुवां, सुविभ्रम ससम्भ्रम दृगन्तबाणपातनैः।
निरन्तरं वशीकृत-प्रतीतनन्दनन्दने, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥३॥

तडित्सुवर्णचम्पक प्रदीप्तगौरविग्रहे, मुखप्रभापरास्त-कोटिशारदेन्दुमण्डले।
विचित्रचित्र-सञ्चरच्चकोरशावलोचने, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥४॥

मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते, प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते।
अनन्यधन्यकुञ्जराज्य-कामकेलिकोविदे, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥५॥

अशेषहावभाव-धीरहीरहारभूषिते, प्रभूतशातकुम्भकुम्भ-कुम्भिकुम्भसुस्तनि।
प्रशस्तमन्दहास्य-चूर्णपूर्णसौख्यसागरे, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥६॥

मृणालबालवल्लरी तरंगरंगदोर्लते, लताग्रलास्यलोलनील-लोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ-मुग्धमोहनाश्रिते, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥७॥

सुवर्णमालिकांचिते त्रिरेखकम्बुकण्ठगे, त्रिसूत्रमंगलीगुण त्रिरत्नदीप्तिदीधिते।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥८॥

नितम्बबिम्बलम्बमान-पुष्पमेखलागुणे, प्रशस्तरत्नकिंकिणी-कलापमध्यमञ्जुले।
करीन्द्रशुण्डदण्डिका-वरोहसौभगोरुके, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥९॥

अनेकमन्त्रनादमंजु-नूपुरारवस्खलत्, समाजराजहंसवंश-निक्वणातिगामिनि।
विलोलहेमवल्लरी-विडम्बिचारुचंक्रमे, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥१०॥

अनन्तकोटिविष्णुलोक-नम्रपद्मजार्चिते, हिमादिजा पुलोमजा-विरञ्चिजावरप्रदे।
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्ध-सत्पदांगुलीनखे, कदा करिष्यसीह मां कृपा-कटाक्ष-भाजनम्॥११॥

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी, त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी।
रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी, व्रजेश्वरी व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते॥१२॥

इतीदमद्भुतस्तवं निशम्य भानुनन्दिनी, करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।
भवेत्तदैव सञ्चित-त्रिरूपकर्मनाशनं, लभेत तद्व्रजेन्द्रसूनु-मण्डलप्रवेशनम्॥१३॥

॥ हरिः ॐ तत् सत् ॥

Radha Kripa Kataksh Stotra In Hindi- अंग्रेजी लिप्यंतरण (Transliteration)

Munindra-vrinda-vandite trilok-shok-harini,
Prasanna-vaktra-pankaje nikunja-bhu-vilasini l
Vrajendra-bhanu-nandini vrajendra-sunu-sangate,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll1 ll

Ashoka-vriksha-vallari vitana-mandapa-sthite,
Pravala-jvala-pallava prabharunanghri-komale l
Varabhaya-sphurat-kare prabhuta-sampadalaye,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll2 ll

Ananga-ranga-mangala-prasanga-bhangura-bhruvam,
Suvibhram sasambhram driganta-banapatanaih l
Nirantaram vashikrita-pratita-nanda-nandane,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll3 ll

Tadit-suvarna-champaka pradipta-gaura-vigrahe,
Mukha-prabha-parasta-koti-sharadendu-mandale l
Vichitra-chitra-sancharach-chakora-shava-lochane,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll4 ll

Madonmadati-yauvane pramoda-mana-mandite,
Priyanuraga-ranjite kala-vilasa-pandite l
Ananya-dhanya-kunja-rajya-kama-keli-kovide,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll5 ll

Ashesha-hava-bhava-dhira-hira-hara-bhushite,
Prabhuta-shata-kumbha-kumbha-kumbhi-kumbha-sustani l
Prashasta-manda-hasya-churna-purna-saukhya-sagare,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll6 ll

Mrinala-bala-vallari taranga-ranga-dorlate,
Latagra-lasya-lola-nila-lochanavalokane l
Lalallulan-milan-manojna-mugdha-mohanashrite,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll7 ll

Suvarna-malikanchite trirekha-kambu-kanthage,
Trisutra-mangali-guna tri-ratna-dipti-didhite l

Salola-nila-kuntale prasuna-guccha-gumphite,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll8 ll

Nitamba-bimba-lambamana-pushpa-mekhala-gune,
Prashasta-ratna-kinkini-kalapa-madhya-manjule l
Karindra-shunda-dandika-varoha-saubhagoruke,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll9 ll

Aneka-mantra-nada-manju-nupuraravaskhalat,
Samaja-raja-hansa-vansha-nikvanatigamini l
Vilola-hema-vallari-vidambi-charu-chankrame,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll10 ll

Ananta-koti-vishnu-loka-namra-padmajarchite,
Himadija pulomaja-viranchija-varaprade l
Apara-siddhi-vriddhi-digdha-satpadangulinakhe,
Kada karishyasiha maam kripa-kataksha-bhajanam ll11 ll

Makheshvari kriyeshvari svadheshvari sureshvari,
Trivedabharatishvari pramanashasaneshvari l
Rameshvari kshameshvari pramodakananeshvari,
Vrajeshvari vrajadhipe shriradhike namostu te ll12 ll

Itidam-adbhuta-stavam nishamya bhanunandini,
Karotu santatam janam kripa-kataksha-bhajanam l
Bhavet tadaiva sanchita-trirupa-karma-nashanam,
Labheta tad-vrajendra-sunu-mandala-praveshanam ll13 ll

ll Harih Om Tat Sat ll

राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र सरल भावार्थ (Simple Meaning)

राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक में भक्त, राधा रानी से यह प्रश्न पूछता है - "हे माँ, आप मुझे कब अपनी कृपा-दृष्टि से कृतार्थ करेंगी?" यह पंक्ति स्तोत्र के लगभग हर श्लोक के अंत में दोहराई गई है, जो भक्त की गहन व्याकुलता और समर्पण को दर्शाती है। नीचे प्रत्येक श्लोक का सरल हिंदी भावार्थ दिया गया है -

श्लोक 1: हे माँ! समस्त श्रेष्ठ मुनिगण जिनके चरणों की वंदना करते हैं, जो तीनों लोकों का शोक हरने वाली हैं, जिनका मुख-कमल सदा प्रसन्नता से खिला रहता है, जो निकुंज-भूमि में विलास करने वाली हैं, जो राजा वृषभानु की पुत्री और व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण की सदा संगिनी हैं - हे राधे! आप मुझे कब अपनी कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 2: हे माँ! आप अशोक वृक्ष की लताओं से बने मंडप में विराजमान रहती हैं, आपके चरण-कमल मूँगे की ज्वाला के समान लाल और कोमल हैं, आपके हाथ वर और अभय मुद्रा में सदा स्फुरित रहते हैं, आप अपार ऐश्वर्य की स्वामिनी हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का भागी बनाएंगी?

श्लोक 3: हे माँ! आपकी भृकुटियाँ कामदेव के रंग-प्रसंगों में मनोहर ढंग से मुड़ी हुई हैं, आप अपने चंचल कटाक्ष-बाणों से नन्दनन्दन श्रीकृष्ण को निरंतर वशीभूत रखती हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 4: हे माँ! आपका गौर शरीर बिजली, स्वर्ण और चम्पा के फूल के समान देदीप्यमान है, आपके मुख की कान्ति करोड़ों शरद-पूर्णिमा के चन्द्रमाओं को भी मात देती है, आपके नेत्र चकोर पक्षी के बच्चों के समान चंचलता से इधर-उधर विचरण करते हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 5: हे माँ! आप उन्मत्त यौवन और आनंदमय मान से सुशोभित हैं, आप अपने प्रियतम के अनुराग से रंगी हुई हैं, आप समस्त कलाओं और विलासों में निपुण हैं, आप निकुंज-राज्य में काम-क्रीड़ा की परम विदुषी हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 6: हे माँ! आप समस्त हाव-भाव और धीर हीरक-हारों से भूषित हैं, आपके स्तन शुद्ध स्वर्ण-कलशों के समान सुंदर हैं, आपकी मंद-मंद मुस्कान सुख के सागर के समान आनंद प्रदान करने वाली है - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 7: हे माँ! जल-तरंगों से हिलती हुई कमल-नाल की लता के समान आपकी कोमल भुजाएँ हैं, आपके नीले चंचल नेत्र पवन में झूलती लता के अग्रभाग के समान चलायमान हैं, समस्त मन को लुभाने वाला मोहन भी आपके मिलन के लिए सदा आतुर और मुग्ध रहता है - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 8: हे माँ! आप स्वर्ण-मालाओं से अलंकृत हैं, आपका कंठ तीन रेखाओं युक्त शंख के समान सुंदर है, आप मंगल-सूत्र में प्रकृति के तीन गुणों और तीन रत्नों की दीप्ति धारण करती हैं, आपके चंचल काले-नीले घुंघराले केश दिव्य पुष्प-गुच्छों से गूँथे हुए हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 9: हे माँ! आपके नितम्ब पर पुष्पों की मेखला-गुण लटक रहे हैं, आपकी कमर सुंदर रत्न-किंकिणियों की मालाओं से सुशोभित है, आपकी जंघाएँ गजराज की सूँड़ के समान सुडौल और सुंदर हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 10: हे माँ! आपके चरणों के नूपुरों की मधुर ध्वनि अनेक वेद-मंत्रों के समान गुंजायमान होती है, वह राजहंसों के समूह के कलरव को भी मात देती है, आपकी चाल स्वर्ण-लता के लहराने के समान मनोहर है - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 11: हे माँ! अनंत करोड़ों विष्णुलोकों में ब्रह्मा जी भी आपके चरणों में झुककर पूजा करते हैं, हिमालय-पुत्री पार्वती, इंद्राणी (पुलोमजा) और सरस्वती (विरंचिजा) को भी वरदान देने वाली आप ही हैं, आपके चरणों की अंगुलियों के नख अपार सिद्धि और वृद्धि से दीप्तिमान हैं - हे राधे! आप मुझे कब कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाएंगी?

श्लोक 12: हे माँ! आप यज्ञों की स्वामिनी, क्रियाओं की स्वामिनी, स्वधा (पितृ-तर्पण) की स्वामिनी, देवताओं की स्वामिनी, त्रिवेद-वाणी की स्वामिनी, समस्त प्रमाण-शासन की स्वामिनी, लक्ष्मी की स्वामिनी, क्षमा की स्वामिनी, आनंद-कानन की स्वामिनी और व्रज की अधिष्ठात्री स्वामिनी हैं - हे श्रीराधिके! आपको मेरा बारंबार नमस्कार है।

श्लोक 13 (फलश्रुति): इस अद्भुत स्तवन को सुनकर वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा भक्त को निरंतर अपनी कृपा-दृष्टि का पात्र बनाएं। इस स्तोत्र के प्रभाव से भक्त के संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण - इन तीनों प्रकार के कर्मों का नाश हो जाता है, और वह अंततः श्रीकृष्ण के दिव्य व्रज-मण्डल में प्रवेश प्राप्त करता है।